Dr – स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर घुसकर चोरी नहीं
करते मत्ती ६:१९-२४ | 1

– Save This Page as a PDF–

स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर घुसकर चोरी नहीं करते

मत्ती ६:१९-२४

खोदाई: फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने व्यवस्थाविवरण २८ की गलत व्याख्या कैसे की? श्लोक १९-२१ में खज़ाने, श्लोक २२-२३ में उदारता, और श्लोक २४ में स्वामी के संबंध में यीशु क्या विकल्प प्रस्तावित करते हैं? ख़ज़ाने और दिल के बीच क्या संबंध है? हृदय और उदारता? मालिक और पैसा? ऐसी कौन सी पाँच बुद्धिमान आदतें हैं जो आपको वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं?

चिंतन: पिछले सप्ताह को ध्यान में रखते हुए, क्या आपका बैंक खाता धरती पर है या स्वर्ग में? आपकी प्राथमिकताएँ क्या हैं? क्या आप खाते बदलना चाहते हैं? हाल ही में बॉस कौन रहा है? आप दो स्वामियों की सेवा क्यों नहीं कर सकते? आपने क्या चुनाव किया है?

सच्ची धार्मिकता के प्रभु के दसवें उदाहरण में, वह हमें भौतिक संपत्ति के प्रति दृष्टिकोण के बारे में सिखाता है और टोरा फरीसी यहूदी धर्म से कैसे भिन्न है। एक बार फिर वह हमें अपने आस-पास की दुनिया के आलोक में अपनी आंतरिक प्राथमिकताओं और मूल्यों का मूल्यांकन करने की चुनौती देता है। धन में स्वाभाविक रूप से कुछ भी गलत नहीं है। हम इब्राहीम और सुलैमान जैसे धर्मपरायण लोगों के बारे में पढ़ते हैं जो बेहद अमीर थे। लेकिन, धन के प्रति हमारा दृष्टिकोण ही महत्वपूर्ण है। पैसा समस्या नहीं है. . . पैसे का प्यार समस्या है. क्योंकि धन का प्रेम सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। कुछ लोग धन की लालसा करके विश्वास से भटक गए हैं, और अपने आप को बहुत दुःखों से छलनी कर लिया है (प्रथम तीमुथियुस ६:१०)।

व्यवस्थाविवरण २८ में परमेश्वर ने वादा किया कि अगर वे इस्राएलियों को उसके वचन के अनुसार चलते हैं तो वह उन्हें भौतिक रूप से आशीर्वाद देंगे, और उन्होंने अवज्ञा करने पर उन्हें गरीबी में लाकर उन्हें अनुशासित करने का भी वादा किया। परिणामस्वरूप, रब्बियों ने अपनी भौतिक समृद्धि को अपनी आध्यात्मिकता के काल्पनिक सबूत के रूप में इस्तेमाल किया, और बिना किसी शर्म के घोषणा की कि वे भौतिक रूप से धन्य थे क्योंकि वे आध्यात्मिक रूप से श्रेष्ठ थे। व्यवस्थाविवरण २८ आज्ञाकारिता के माध्यम से आशीर्वाद का वर्णन करता है; हालाँकि, लालच, बेईमानी, धोखे या किसी अन्य अनैतिक तरीके से जमा की गई किसी भी संपत्ति को परमेश्वर के आशीर्वाद के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। केवल किसी के धन, स्वास्थ्य,

Dr – स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर घुसकर चोरी नहीं
करते मत्ती ६:१९-२४ | 2

प्रतिष्ठा या किसी अन्य चीज़ के आधार पर परमेश्वर की स्वीकृति का दावा करना उनके वचन और उनके नाम को विकृत करना है। इस प्रकार, यीशु के समय में धार्मिक नेताओं के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य भौतिक धन संचय करना था।

अमीर और गरीब दोनों की अपनी-अपनी आध्यात्मिक समस्याएँ हैं। लेकिन, यह मार्ग उन अमीरों के लिए निर्देशित है जो अपनी संपत्ति पर भरोसा करने के लिए प्रलोभित होते हैं और अपने खजाने की झूठी सुरक्षा में आत्म-संतुष्ट हो जाते हैं। वर्तमान परिच्छेद में येशुआ भौतिकवाद को – विशेष रूप से विलासिता के संबंध में – प्राथमिकताओं, उदारता और आज्ञाकारिता के तीन दृष्टिकोणों से देखता है।

सबसे पहले, मसीहा ने हमें हमारी प्राथमिकताओं पर एक नज़र डालने को कहा। हमारे लिए वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है और हम उस विश्वास को कैसे प्रदर्शित कर सकते हैं? आरंभ करने के लिए, परमेश्वर हमें याद दिलाते हैं कि हमें अपना पूरा विश्वास भौतिक संसार में नहीं रखना चाहिए। पृय्वी पर अपने लिये धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं (मत्ति ६:१९)। यहां संदर्भ धन के ऐसे भंडार का सुझाव देता है जिसका उपयोग नहीं किया जा रहा है, बल्कि धन का दिखावा करने के लिए इसे जमा किया गया है। यहां येशुआ की चेतावनी की कुंजी आप स्वयं हैं। जब हम केवल अपने लिए संपत्ति जमा करते हैं, चाहे जमा करना हो या खुले दिल से खर्च करना हो, तो वह संपत्ति मूर्ति बन जाती है। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां कीड़ा और काई नष्ट नहीं करते, और जहां चोर सेंध लगाकर चोरी नहीं करते (मत्ती ६:२०), जहां हम अनन्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मसीह यह नहीं कह रहे हैं कि यदि हम अपना खजाना सही जगह पर रखते हैं तो हमारा दिल सही जगह पर होगा, बल्कि, यह कि हमारे खजाने का स्थान इंगित करता है कि हमारा दिल पहले से ही कहाँ है। आध्यात्मिक समस्याएँ सदैव हृदय की समस्याएँ होती हैं। पापपूर्ण कार्य पापी हृदय से आते हैं, जैसे धार्मिक कार्य धार्मिक हृदय से आते हैं।

इस अनुच्छेद से, साथ ही पवित्रशास्त्र के कई अन्य अनुच्छेदों से यह स्पष्ट है कि यीशु आध्यात्मिकता के साधन के रूप में गरीबी की वकालत नहीं कर रहे हैं। अपनी सभी मुलाकातों में, उसने केवल एक बार एक व्यक्ति से कहा कि अपनी संपत्ति बेचकर गरीबों को दे दो (मैथ्यू १९:२१)। उस विशेष मामले में, युवक का मामला, उसकी संपत्ति उसकी आदर्श थी, और परिणामस्वरूप उसके और येशुआ मसीहा के प्रभुत्व के बीच एक बाधा बन गई। इसने यह जांचने का एक बड़ा अवसर प्रदान किया कि क्या वह अपने जीवन का स्टीयरिंग व्हील परमेश्वर को देने के लिए तैयार है या नहीं। यह पता चला कि वह ऐसा नहीं करेगा। समस्या उसकी संपत्ति में नहीं थी, बल्कि उसे छोड़ने की उसकी अनिच्छा में थी। गैलीलियन रब्बी ने स्पष्ट रूप से अपने प्रेरितों से यह अपेक्षा नहीं की थी कि वे उसका अनुसरण करने के लिए अपने सारे धन और अन्य संपत्ति छोड़ दें, हालाँकि हो सकता है कि उनमें से कुछ ने ऐसा किया हो। हालाँकि, उसे अपने आदेशों का पालन करने की आवश्यकता थी, चाहे इसकी कोई भी कीमत चुकानी पड़े। जाहिर तौर पर अमीर युवा शासक के लिए कीमत बहुत अधिक थी, जिसके पास संपत्ति पहले आती थी।

Dr – स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर घुसकर चोरी नहीं
करते मत्ती ६:१९-२४ | 3



क्योंकि जहां तेरा धन है, वहीं तेरा मन भी रहेगा
(मत्ती ६:२१)। सबसे शक्तिशाली जीवन सबसे सरल जीवन है। सबसे शक्तिशाली जीवन वह है जो जानता है कि उसे कहाँ जाना है, जो जानता है कि शक्ति का स्रोत कहाँ है, और वह जीवन जो अव्यवस्था और जल्दबाजी से मुक्त रहता है। व्यस्त रहना कोई पाप नहीं है. यीशु व्यस्त था. पॉल व्यस्त था. पतरस व्यस्त था. प्रयास, कड़ी मेहनत और थकावट के बिना कोई भी महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल नहीं होती। व्यस्त रहना अपने आप में कोई पाप नहीं है। लेकिन, उन चीज़ों की अंतहीन खोज में व्यस्त रहना जो हमें अंदर से खाली, खोखला और टूटा हुआ छोड़ देती हैं – यह ईश्वर को प्रसन्न नहीं करता है। परिणाम केवल थकावट और असन्तोष है।

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए पाँच बुद्धिमान आदतें हैं। सबसे पहले, अच्छे रिकार्ड रखें (नीतिवचन २७:२३-२४); दूसरे, अपने खर्च की योजना बनाएं (नीतिवचन २१:५; सभोपदेशक ५:११); तीसरा, भविष्य के लिए बचत करें (नीतिवचन १३:११ और २१:२०ए); चौथा, दशमांश. हमें उन लोगों का समर्थन करने की ज़रूरत है जो हमें आध्यात्मिक रूप से खिलाते हैं (मैथ्यू १०:५-११; ल्यूक ९:१-५; और १३:२९; पहला तीमुथियुस ५:१७-१८), लेकिन, उसके बाद हम जो प्रतिशत देंगे वह निर्धारित किया जाएगा हमारे अपने दिलों का प्यार और दूसरों की ज़रूरतें (देखे Do – जब आप जरूरतमंदों को देते हैं, तो दूसरों द्वारा सम्मानित होने के लिए ऐसा न करें); पाँचवाँ, जो तुम्हारे पास है उसका आनन्द लो (सभोपदेशक ६:९; इब्रानियों १३:५)।

दूसरा, यीशु चाहते हैं कि हम अपनी उदारता को देखें, क्योंकि वह गुण हमारे हृदय के बारे में बहुत कुछ प्रकट करता है। क्या हम लालची हैं, लगातार अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं, या हम उदार हैं, और दूसरों के बारे में चिंतित हैं। आँख शरीर का दीपक है। यदि आपकी आंखें अच्छी हैं, यानी यदि आप उदार हैं, तो आपका पूरा शरीर प्रकाश से भरपूर होगा। यहूदी धर्म में, “अच्छी नज़र रखना” या ‘अयिन्टोवा’ का अर्थ है उदार होना, और “बुरी नज़र रखना” या ‘अयिन राह’ का अर्थ है कंजूस होना। परन्तु यदि तेरी आंखें खराब हों, तो तेरा सारा शरीर अंधकार से भर जाएगा। यदि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार है, तो वह अंधकार कितना बड़ा है (मत्ती ६:२२-२३)। जो आँख बुरी है वह उस हृदय से निकलती है जो स्वार्थी है। जो

Dr – स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर घुसकर चोरी नहीं
करते मत्ती ६:१९-२४ | 4

व्यक्ति भौतिकवादी और लालची है वह आध्यात्मिक रूप से अंधा है। सिद्धांत सरल और गंभीर है: जिस तरह से हम अपने पैसे को देखते हैं और उसका उपयोग करते हैं वह हमारी आध्यात्मिक स्थिति का एक निश्चित बैरोमीटर है। यह सही व्याख्या है, इसकी पुष्टि पिछले और अगले दोनों छंदों में पैसे के संदर्भ, लालच और चिंता से होती है। यह परिच्छेद साक्ष्यों की श्रृंखला में एक और कड़ी है कि नई वाचा की घटनाएँ हिब्रू में घटित हुईं।

तीसरा, येशुआ चाहता है कि हम वास्तव में समझें कि हमारी आज्ञाकारिता कहाँ है। हमारा स्वामी कौन है या क्या है? हमें एक विकल्प चुनना होगा. वहां कोई मध्य क्षेत्र नही है। जिस प्रकार हम अपना खजाना स्वर्ग और पृथ्वी दोनों में नहीं रख सकते, उदार और कंजूस नहीं हो सकते, उसी प्रकार हम दो स्वामियों (ग्रीक: कुरियोस) की सेवा नहीं कर सकते। परिणामस्वरूप, यीशु ने बलपूर्वक घोषणा की: कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता (मत्ती ६:२४ए)।

कुरियोस, या स्वामी, का अनुवाद अक्सर स्वामी किया जाता है और यह केवल एक नियोक्ता नहीं, बल्कि एक दास मालिक को संदर्भित करता है। एक व्यक्ति के पास एक ही समय में कई नियोक्ता हो सकते हैं और उनमें से प्रत्येक के लिए संतोषजनक ढंग से काम कर सकता है। आज बहुत से लोगों के पास दो या तीन नौकरियाँ हैं। लेकिन, यहां विचार गुलामों का है और गुलाम मालिक का गुलाम पर पूरा नियंत्रण होता है। एक गुलाम के लिए, अपने स्वामी के प्रति अंशकालिक दायित्व जैसी कोई चीज़ नहीं होती है। वह एक पूर्णकालिक मास्टर की पूर्णकालिक सेवा का ऋणी है। वह पूरी तरह से अपने मालिक के स्वामित्व और नियंत्रण में है। उसके पास किसी और के लिए कुछ भी नहीं बचा है. किसी और को कुछ भी देना उसके स्वामी को स्वामी से कमतर बना देगा। दो स्वामियों की सेवा करना और दोनों के प्रति आज्ञाकारी रहना कठिन ही नहीं, बल्कि सर्वथा असंभव है।

बार-बार ब्रिट चादाशाह मेशियाक को परमेश्वर और स्वामी के रूप में और विश्वासियों को उसके दास के रूप में बोलते हैं। रब्बी शाऊल हमें बताते हैं कि बचाए जाने से पहले हम पाप के गुलाम थे, जो हमारा स्वामी था। क्या तुम नहीं जानते कि यदि तुम अपने आप को किसी के आज्ञाकारी दास के रूप में प्रस्तुत करते हो, तो जिसकी तुम आज्ञा मानते हो, तुम उसके दास हो – चाहे पाप के, जो मृत्यु की ओर ले जाता है, या आज्ञाकारिता के, जो अधिक धर्मी बनने की ओर ले जाता है . परन्तु, जब हम बचाए गए, तो हम परमेश्वर और धार्मिकता के दास बन गए। परन्तु परमेश्वर की कृपा से तुम ने, जो पहिले पाप के दास थे, उस शिक्षा के नमूने का, जिस से तुम अवगत हुए थे, हृदय से पालन किया; और जब तुम पाप से मुक्त हो गए, तो धार्मिकता के दास बन गए (रोमियों ६:१६-१८)।

येशुआ यह नहीं कह रहा है कि हमें काम की ज़रूरत नहीं है, कि हमें खाने की ज़रूरत नहीं है, या हमें इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि हम कैसे कपड़े पहनते हैं। वह उन चीज़ों के प्रति चेतावनी दे रहा था जो इतनी महत्वपूर्ण हो जाती हैं कि हम उस

Dr – स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर घुसकर चोरी नहीं
करते मत्ती ६:१९-२४ | 5

पर भरोसा करने के बजाय पैसे के गुलाम बन जाते हैं। यदि हमारी निष्ठा आज्ञाकारिता किसी भी चीज़ या किसी और के साथ निहित है, जिसमें हम भी शामिल हैं, तो हम मसीह पर प्रभु होने का दावा नहीं कर सकते। और जब हम ईश्वर की इच्छा को जानते हैं लेकिन उसका विरोध करते हैं, तो हम दिखाते हैं कि हमारी वफादारी किसी चीज़ या किसी और के साथ है। हम एक ही समय में दो स्वामियों की सेवा तब तक नहीं कर सकते जब तक हम एक ही समय में दो दिशाओं में नहीं चल सकते। हम या तो एक से नफरत करेंगे और दूसरे से प्यार करेंगे, या एक के प्रति समर्पित रहेंगे और दूसरे को तुच्छ जानेंगे। आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते (मैथ्यू ६:२४बी)। ऐसी शिक्षा पैसे के प्रति फरीसी के झूठे रवैये को ठीक करने के लिए बनाई गई थी।

१९१५ में पादरी विलियम बार्टन ने लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित करना शुरू किया। एक प्राचीन कथाकार की पुरातन भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने दृष्टान्तों को सफेड द सेज के उपनाम से लिखा। और अगले पंद्रह वर्षों तक उन्होंने सफ़ेद और उसकी स्थायी पत्नी केतुराह के ज्ञान को साझा किया। यह एक ऐसी शैली थी जिसका उन्होंने आनंद लिया। कहा जाता है कि १९२० के दशक की शुरुआत तक सफ़ेद के अनुयायियों की संख्या कम से कम तीन मिलियन थी। एक सामान्य घटना को आध्यात्मिक सत्य के चित्रण में बदलना हमेशा बार्टन के सेवकाई का मुख्य विषय था।

हमने एक यात्रा की, मैं और केतुराह, और हमने एक निश्चित शहर में कारें बदलीं, और हमने वहां एक रात एक सराय में रुकी। और हम भोजन करने के बाद विदेश चले, और शाम हो गई थी। और दुकानें बंद थीं, लेकिन फिल्में खुली थीं। और हमने कांच के पिंजरे में बंद एक लड़की को दो पैसे दिए, और हम अंदर जाकर बैठ गए।

और हमने एक चलती-फिरती तस्वीर देखी, जिसका विषय था पुण्य का पुरस्कार। और यह एक युवा महिला के बारे में था जिसे कैपिटल ए के साथ कला पसंद थी, और जो बर्तन धोना पसंद नहीं करती थी। और वह अपना घर छोड़कर एक महान शहर में चली गई और कला का अध्ययन किया। और वह महान प्रलोभनों के अधीन थी, जो सभी हमें दिखाए गए थे, और जिस तरह से उसे प्रलोभित किया गया था वह भरपूर था। लेकिन किसी भी चीज़ ने उसे घर वापस जाने और रसोई के सिंक में बर्तन धोने में अपनी माँ की मदद करने के लिए प्रेरित नहीं किया। तो वह बहुत कगार पर आ गई। और जिस आदमी ने उसे सबसे अधिक प्रलोभित किया वह भेष बदलकर करोड़पति था। और जितना अधिक उसने उसे प्रलोभित किया, उतना ही अधिक वह उससे प्रेम करने लगा। और जब उसे पता चला कि वह उससे शादी किए बिना उसे नहीं पा सकता, तो उसने उससे शादी करने की पेशकश की। और वे शादीशुदा थे. तो पुण्य का पुरस्कार बैंक में नकद था। और हमने इस अत्यधिक नैतिक फिल्म को देखा। और हम दोनों ने जम्हाई ली।

फिर मैंने केतुराह से बात की और कहा, दो और फिल्में हैं। क्या हम उनके लिए रुकें?

और उसने कहा, इन बातों से मुझे कोई आनन्द नहीं आता।

Dr – स्वर्ग में खजाना जमा करो, जहां चोर घुसकर चोरी नहीं
करते मत्ती ६:१९-२४ | 6

और मैंने कहा, यह हमारी गति के अनुरूप नहीं है। अब चलें।

इसलिए हम तब गए जब यात्रा अच्छी थी।

और जैसे-जैसे हम भटकते गए, हम डाउन टाउन चर्च में पहुँचे, जहाँ अमीर चले गए थे, और गरीब रह गए थे। और दरवाज़ा खुला था और हम अंदर गए। और वहाँ एक प्रार्थना सभा थी। और वहां उतने लोग नहीं थे जितने फिल्मों में थे। और जो प्रभु से प्रेम रखते थे, उन्होंने वहां एक दूसरे से बातें की, और एक दूसरे को सान्त्वना दी, और दिन के काम के लिए साहस के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की।

और हमने उनके चेहरों में देखा, और उनके शब्दों में ऐसे नाटक और त्रासदियाँ सुनीं जैसे किसी भी फिल्म का आविष्कार कभी नहीं हुआ। और उनके लिए सद्गुण का प्रतिफल आगे बढ़ने के विश्वास, और विवेक की स्वीकृति, और ईश्वर की शांति में था।

और हम सराय में लौट आए, और मैं ने कतूरा को उत्तर दिया,

वह भी एक चलती फिरती तस्वीर थी, और वह बहुत बढ़िया सामग्री थी।

और केतुरा ने कहा, वह असली बात थी। वह जीवन था.

और जब हम उस रात अपने बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठे,

हमने दोनों कंपनियों के लोगों के लिए प्रार्थना की।